International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 32-34

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 32-34
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-03-2024
Accepted: 26-04-2024

डॉ. शूचिता लालचंद दलाल
प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षा,
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ,
महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
डॉ. शूचिता लालचंद दलाल
प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षा,
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ,
महाराष्ट्र, भारत

यजुर्वेद में वर्णित वनस्पतीयाँ

डॉ. शूचिता लालचंद दलाल

प्रस्तावना

यजुर्वेद कर्मकाण्ड से संबंद्धित है। कर्मकाण्ड और यज्ञयागादि एकही नाने के दो पहेलु है। वेदोमें नवनकाण्डतक सिर्फ कर्मकाण्ड है, तथा अंतिम ज्ञानकाण्ड है। मानवजीवनके आयुसे संबंद्धित कर्मकाण्ड का है वैशिष्टय प्रामुख्य है। आधिभौतिक जीवन में अतः कर्म सें संबंद्धित यज्ञयागादि प्रक्रिया में 'आहुति', 'समाधि' इ. मन्त्रों सें समर्पित होती है।

यज्ञ में मन्त्रों से साथ अन्य साधने भी उपयुक्त होती है। जैसे स्त्रुवा, ब्रीही, नीवार, घृत, यव, इत्यादि अनेक साधन प्रयुक्त होते है। यज्ञद्वारा समृद्धि प्राप्तहेतु यज्ञयाग में इसका उपयोग किया जाता है, अतः यजमान अपनी सम्पत्ती, द्रव्य तथा वृद्धिहितार्थ आहुति देते है।

यजुर्वेद के अठरावे अध्याय के यज्ञ में –
'ब्रीहयश्च मे .....मे तिलाश्च मे मुद्धाश्चमे खलबोश्च मे प्रियङवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकांश्च मे नीवाराश्च मे गोधमांश्च मे मसूरांश्च मे यज्ञेन कामनाम्।

ब्रीहि, जौ, भाषा च मे यज्ञेन कामनाम्।' यजु.18. 92

ब्रीहि, जौ, भाषा (उडद), तिल, मुदगा (मुंग), खल्वा (चना), प्रियङु छोटा धान्य, अणवः (चीनक), श्यामाकाः (साँवा), नीवाराः (धान्य) गोधमाः (गेहूँ), मसूरा (मसूर), ये सभी पदार्थों की उत्पत्ती वृक्ष या वनस्पती से ही होती है। [1]

मनुस्मृती में भी पुष्परहित किन्तु फलवन्त है उसे वनस्पती कहते है। तथा जो पुष्प सहित तथा फल भी देती है, उसे वृक्ष कहते है। [2] भुमिसे उत्पन्न (उद्विन) सभी बीजकाण्ड, तृण, अनेक पुष्पसहित, फलसहित उत्पन्न वृक्ष हितकारक होते है। [3] यजुर्वेद में वीरूघः, औषधयः कृष्टपच्या, अकृष्टपच्या वर्धित दोनो से यज्ञ को आवाहन करते है।

'मे वीरूधेः च मे औषधयश्च मे कृष्टपच्याश्चे मेऽकृष्टपच्याश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। '[4]

इसीसे 'वीरूध तृण, मुल्यादि वनस्पतीयाँ तथा औषधियाँ और (कृष्टपच्याः) जो मैने जोतन की है अतः उसी कारण जो प्राप्त होती है और अकृष्टपच्याः अर्थात् जिसे मैने खेत में जोते विना ही उत्पन्न होती है, ऐसी ये औषधियाँ वर्धन होवे। अर्थात् साधारणतया अपनेआप उत्पन्न होनेवाली वटवृक्षादि, पिप्पलादि, औदुम्बरादि औषधियाँ युक्त है। यह कहना अनुचित नही होगा। अतः 'वनस्पतयः यज्ञेन कल्पन्ताम्। '[5]यज्ञ वनस्पतीयों का वर्धन करे।

नित्यनैमित्तिक यज्ञ पूजा में भी इनका उपयोग किया जाता हे। यज्ञ में 'होता' वनस्पतीयों का यजन करते है जो पिसी हुई होती है।

होता वनस्पतिमभि हि पिष्टतमय् । 21.06 यजुर्वेद

वनस्पतीयों के अपने प्रिय–स्थान, मार्ग जलादि में वनस्पती देवता रक्षण करती है। (वनस्पतिः देव उपावस्त्रक्षत) ऐसे अर्थात् वनस्पतीयों के स्थान में देवगण हवि का सेवन करते है। 'इन्द्र' वनस्पती देवता का उल्लेख प्राप्त है। उसी इन्द्रदेवता को प्रसन्न करने हेतु उत्तम–पुष्पसहित फल देते है। सुपिप्पल सुंदर फल के कारण देवता हविद्वारा यजन करते है। [6] अग्निदेवता के लिए भी वनस्पती का उल्लेख पाया जाता है। काष्ठ वा समिधा अग्नि का मानो प्राण हे।

यजुर्वेद के सतरावे अध्याय में (17/79) समिधाएँ सात बलताई है। यह सात समिधा दार्शनिकदृष्ट्या महत्त्वपूर्ण है। 'सप्त ते अग्ने समिधः'। 'प्राणौ वै समिधा' यह उल्लेख अनुवादक कुँवरलाल जी ने यजुर्वेद में किया है। [7]

अग्नि के प्रज्वेलनार्थ समित है। 'समिदसि'। (यजु 2/5) प्रजा के लिए कल्याणकारी अग्नि वनस्पती को प्रसन्न करे, उन्हे सन्तापजनक न बनाएँ। अतः अग्नि को गर्भरूप में प्रतिपादित किया है। 'सः गर्भः अ.... (11–43 यजु.) औषधीयों को महत्ता देखकर उसे पुष्ट करने का वर्णन किया है। माता जैसे शिशु को पुष्ट करोती है, वैसेही अग्नि गर्भ में वनस्पती के पास आती है। (11–43 यजु.) स जातो नथो अस्ति। (11–43 यजु.)

शिवो भव प्रजाभ्यो मानुपीभ्यासत्वेमडिरः
मा द्यावापृथिवी अभि शौचिमाऽवरिक्षं मा वनस्पतीत्।। 11.45 यजु.

प्रजा के लिए कल्याणकारी अग्नि का स्वीकार औषधीयों ने करना चाहिएँ, इसी का उल्लेख भी यजुर्वेद में है। वह औषधी 'पुष्पवतीः', सुपिप्पलाः' इति विशेषणोंसे वर्णित है। परम्परा से अग्नि और औषधीयाँ के वृक्षोंका संबंध इस मन्त्र से स्पष्ट होता है। ऋतुकालानुसार औषधीयाँ गर्भित[8] रहती है। अर्थात् ऋतुकाल में विशिष्ट वनस्पती उत्पन्न होती है।

औषधयः प्रति गृभ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः
अयं वो गर्भ ऋत्वियेः प्रत्नं सधस्थमाऽसंदत्ः।।

स्वीकार करता, प्रलाभ अग्नि, सधस्थं, प्राचीन काल आदि पद भी महत्त्वपूर्ण है। औषधयः प्रति मोदध्वमग्निमेत्तम् शिवमायन्तेमभ्यत्रं युगा।'अग्निको प्रसन्न रखने का वनस्पती को कहते है। 11.47 यजु) 'यज्ञविज्ञा' ग्रन्थ में औषधीयाँ के बारह प्रकार बदलाते है। ये सभी औषधीयाः वनस्पतीसेही संबंधित है। यही औषधीयाँ समिधारूपसे अग्नि की सेवा करे। समिधा से प्रज्वलित अग्नि में हव्य पदार्थो हवन [9]करने का उल्लेख है। वायुपुराणमें ये बारह औषध हवि को समर्पित करने का उल्लेख 'यज्ञविज्ञा' में दिया है।

शतपथ ब्राह्मण में 14/6/3/13
'दश ग्राभ्याणि धान्यानि भवन्ति व्रीहियवौ तिलभाषा अणुप्रियङवो गोधमाश्च खल्याश्च .....कुणश्च तान् पिष्टान् दध्नि मधुनि धृतमुपमसिश्चत्याज्यस्य जुहोति। '[10]

इसप्रकार वायुपुराण ओदन, ताण्डूल, लाजाः इ. का भी उल्लेख है[11]। अतः अग्नि में हवन करने के कारण ही अग्नि को गर्भ कहलाए। और इस गर्भ में औषधीयाँ या वनस्पतीयाँ है।

'गर्भो अस्याषैधीनां गर्भो वनस्पतीयाम्। 12.37 यजु.

औषधी तथा वनस्पती आयु के लिए महनीय है। वनस्पतीयों रस, अन्त तथा बल की प्राप्ती होती है। यह वनस्पतीयाँ पर्वत तथा पाणी में भी प्राप्त होती है। उल्लेखनीय अनुमान से सन्जीवनी हेतु पर्वत का
अश्मन् पर्वते शिश्रियाणं उर्जं अद्भ्यः औषधीभ्यः वनस्पतीभ्यः अधि सम्भृतं प्यः वां इषं उर्जं वः धत्तः [12] यह अग्निदेवता का त्रयीलोके में रस धारण करने की इच्छा प्रदर्शित करती है।
यजु 18.36 में उक्त मन्त्र इसप्रकार –

पयेः पृथिव्यां पय् औषधीपू पयौ दिव्यन्तरिक्षे पयों धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्याम्।। 18.36 यजु.

यह रस या औषधी उत्पन्न वनस्पती दीर्घायु हेतु कि है। इसी कारणात् जल से उत्पन्न होनेवाली औषधी यक्ष्णा इ. रोगोंका नाश करती है।

सुपिप्पलाः औषधयः प्रजाभ्यः अयक्ष्माय उज्जिहताम् (उत्पन्न हो) [13]
पुष्पों से फल उत्पन्न करनेवाली औषधी 'वीरूधः' पारयिष्णवः। अनेक प्रकारकी रोगनाशिका है। व्याधियों को दूर करती है। इसी कारण औषधी को 'मातरः देवीः 'विशेषण उपयुक्त किया है। [14]अश्वाथ (पिप्पल) के काष्ठ से यज्ञ के लिए या औषधीयों के लिए वनस्पती की उपयुक्तता होती हे। पलाशपत्र से जुहु निर्मित होता है, ऐसा अनुवाद कुँवरजी ने किया है। [15]

अश्वत्थे वो निषदनं पणे वो वसतिष्कृता।।

इस औषधी के कारण राजा जिसप्रकार शत्रू का नाश करता है, उसीप्रकार औषधीयाँ अपने गुणों के कारण रोग का नाश करती है। 12.80 यजु. औषधी से उपचार करने कारण 'विप्रः भिषम् उच्यते'। [16] ब्राह्मणों वैद्य कहा जाता है। यह सर्व दुःखदायक औषधी जानता है। औषधीयोंकी शक्ती 'औषधीनां शुष्माः उद् इरते' स्पष्टतया दिखती है।
यजुर्वेदमें औषध वनस्पती के अनेक मन्त्र पाएँ जाते है। इसी एक मन्त्रमें व्याधी दूर करनेवाली होने के कारण 'निष्कृतीः' भी कहा है।[17] द्वादशीध्याय में 12.84, 12.85, 12.86, 12.87, 12.88, 12.89 यह सभी मन्त्र औषधीयुक्त है, यह ही यजुर्वेद का वैशिष्ट्या है। जो जीव औषधीयाँ खाते है, वह नष्ट नही होते। [18]
वनस्पतीयोंमें 'सोमवल्ली' को रानी का स्थान दिया है। औषधीयों में सबसे श्रेष्ठ 'सोमवल्ली' कही गयी है। वह रात सों रोगो दूर करनेवाली है। इसीकारण वह 'उत्तमा' है। हृदय को कल्याण प्रदान करती है। यह मन्त्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अतः वह यहा वर्णित करती हूँ –
इसीप्रकार दुसरा मन्त्र भी श्रवणीय है –

याः औषधीः सोमराज्ञाविहिता पृथ्विवीमनु।
वृहस्पतिप्रसूता अस्यै संदत्त वीर्यम्।।यजुर्वेद12.93

अन्य औषधी यदि पृथ्वीपर राज्ञी को अधिक होती है, वे वैद्य (या विद्वान) ही जान सकते है, इस ज्ञानी को अधिक शक्ती दे की, प्रार्थना की गयी है। 'यह वीर्यः' वीरशाली–संजीवनी शक्ती नाना प्रकार उगती है। वह पास में या दूर में भी होती है। यह औषधीयाँ अर्शस (बवासीर), यक्ष्म, पाकार (फोड) इन सभी रोगों का नाश करती है, ऐसा उल्लेख [19] यजुर्वेद में किया है।
वनस्पतीयों का खनन करनेवाले की भी रक्षा करे। द्विपाद्, चतुष्पाद अर्थात् पुरूष तथा पशु को भी रोगरहित करे। चतुष्पाद भोजनवशात् व अन्य कारणात् स्त्री–पुरूष भी वनस्पतीयों का खनन करते है। अतः उन्हीकी रक्षा भी औषधीयाँ करती है। औषधी उत्पत्ती का वर्णन करके गंधर्व, अनंतर इन्द्र, तद्नंतर बृहस्पती ने औषधों को खोदा है। सोनराजा ने उन्हे यक्ष्म से मुक्त किया। अतःकथा का सविस्तर संशोधन आवश्यक है।
इसप्रकार 'शमिता नो वनस्पतिः।' वनस्पती सुखदायक कल्याणदायक है। इसीकारण भिषक देवः वनस्पतिः इष्ट वनस्पती देवता ने 'इष्ट' यज्ञ किया। इस यज्ञ के समिधा वटादी के काष्ठ डाले जाते है। उस वटवृक्ष के वर्णनसे उसकी उपयुक्तता तथा महत्ता स्पष्ट होती है।[20] वनस्पती.....घृतेन।
वटवृक्ष स्वयं पाशसे अवसृष्ट मुक्त होकर अपनी सामर्थ्य 'सं अञ्जन्' प्रकाशित होकर देवः दिव्यगुणयुक्त शान्ती देता है। इन्द्र के जठर समान ही पूर्ण करके यज्ञ को सहृद (मधु) तथा घृत से स्वयं ग्रहण करता है।
इसप्रकार वटवृक्ष महावृक्ष है। मुक्त होकर भी पुरूष उत्पन्न होकर अन्य प्रजा का अपने गुणों से रक्षित करता है, ते 'ओषध्याः मूलं या हिंसिषम्।' औषधीयों को बीज से हिंसा नहीं करती चाहिए।[21] अतः समिधा के द्वारा अग्नि का सेवन करे। घृत की आहुति दे। घृतेन

वर्धयामसि 3.3 यु यजमान स्वयं 'मम समिधः जुषस्व' मेरी समिधाएँ ग्रहण करे। [22]

इसप्रकार यजुर्वेद में वनस्पतीयों का वर्णन किया है। इस वर्णन यज्ञयाज्ञादि में प्रयुक्त धान्यादि के तृण, मधूर, उद्वद तथा वनस्पती तथा औदु, वट, पलस, इ. का भी वर्णन है। वनस्पतीयाँ जीवनप्रवाह में स्वयं समर्पित होकर सुखदायक है।

आयुर्वेद अथर्ववेद से उत्पन्न है। ऐसा कहा जाता है। किन्तु यजुर्वेद में भी औषधीयों का वर्णन है। अतः यजुर्वेद भी आयुर्वेद से संबंधीत है।

अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमासादि याग किए जाते है। केवल स्वर्गप्राप्ती यह सामान्य मनुष्य की अपेक्षा नहीं रहती। अपितु पुत्रपौत्रादि, धनधान्यादि दीर्घायु इसी में उनकी आकांक्षा रहती है। अतः यज्ञयागादि की महत्ता मानी जाती है। इसी यज्ञयागादि प्रक्रियोंमें वनस्पतीयों वा वृक्षों का अपना एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ सूची

1. यजुर्वेद अ. 18/12, पृ. 978
2. मनुस्मृति 12.47
3. मनुस्मृति 146
4. यजुर्वेद 18.14 (पृ. 981)
5. यजुर्वेद 18.13, . पृ. 980
6. पृ. 33 अ 21
7. यजुर्वेद 17.79,पृ. 945
8. यजुर्वेद 11.48
9. आस्मिन् हव्या जुहोतन।.यजुर्वेद 12.30
10. शतपथ ब्राह्मण –14/6/3/13
11. यज्ञविद्या पृ. 169
12. यजुर्वेद 17/9 पृ. 874
13. यजुर्वेद 22.38
14. यजुर्वेद 12.78
15. यजुर्वेद 12/79 पृ. 611
16. .यजुर्वेद 12.80
17. यजुर्वेद 12.83
18. यजुर्वेद 12.91
19. यजुर्वेद 12.97
20. यजुर्वेद 20.45
21. यजुर्वेद 1.27
22. यजुर्वेद 3.1,3.4